बनारस के टेराकोटा खिलौने

डॉ0 रतन कुमार
ललित कला विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ

अमूर्त्त/सारांश– यह शोध पत्र बनारस के टेराकोटा खिलौनों के महत्व एवं इसके निर्माण की विधि तथा प्रयोग में लाई गयी सामग्री का वर्णन करते हुए विभिन्न तकनीकों पर प्रकाश डालता है। इस क्षेत्र में मिट्टी के खिलौने बनाने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है, जैसा कि सिन्धु घाटी सभ्यता, मोहनजोदड़ों से प्राप्त साक्ष्यों से पता चलता है जो इस क्षेत्र के सांस्कृतिक, परम्परा एवं सामाजिक मूल्यों एवं कलात्मक संवेदनाओं को दर्शाता है। यह पत्र वाराणसी में कुम्हारों द्वारा टेराकोटा खिलौने बनाने के लिए प्रयोग की जाने वाली प्राचीन से लेकर वर्तमान तक की विधियों को रेखांकित करता है, जिसमें हाथ द्वारा, सांचे द्वारा, चाक द्वारा तथा एकपलिया एवं द्विपलिया तथा मिश्रित विधि शामिल है। यह पत्र उपर्युक्त विधियों से उत्पादित खिलौने के विभिन्न प्रकार पर चर्चा करते हुए जैसे कि जानवरों, पक्षियों, मनुष्यों, देवी–देवताओं की मूर्तियों का वर्णन करता है। शोध पत्र 'टेराकोटा' से बने बच्चों के खिलौने की भूमिका एवं मुखौटों की भूमिका और धार्मिक अनुष्ठानों में उनके महत्व की जाँच करता है। आगे इस शोध पत्र पारम्परिक टेराकोटा उद्योग पर आधुनिकीकरण तथा समय के साथ आये परिवर्तन और बड़े पैमाने पर उत्पादित हो रहे प्लास्टिक एवं फाइवर के खिलौनों की शुरूआत में आये प्रभाव की पुष्टि करता है। वाराणी के कारीगर एवं शिल्पकार समय के साथ आयी इन चुनौतियों के बावजूद सुन्दर अद्वितीय एवं जटिल टेराकोटा कृतियां बनाना जारी रखा है, जो भारत की अमूल्य पारम्परिक टेराकोटा कला की सांस्कृतिक विरासत एक मूल्यवान पहलू को संरक्षित करती है। पत्र पारम्परिक शिल्प को समर्थन देने के साथ भविष्य की पीढ़ियों के लिए इस प्राचीन कला को अमूल्य धरोहर के रूप में संरक्षित करने के महत्व पर जोर देते हुए इसकी उपयोगिता को परिलक्षित करता है।

भारतीय कला में मृणमयी खिलौनों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। मिट्टी के खिलौने एवं अन्य वस्तुओं की कला के द्वारा मानव समाज के संस्कृति एवं कला का पता चलता है, अर्थात कला एवं संस्कृति का दर्पण खिलौना भी है।

मिट्टी से मानव का बहुत नजदीकी संबंध रहा है और आज भी है। इसलिए मिट्टी के खिलौने वगैरह बनाने की परंपरा रही है, क्योंकि मिट्टी सरलता से उपलब्ध माध्यम है। खिलौने बनाने का प्रचलन हमारी संस्कृति सिंधु घाटी से लेकर

आज तक है और सिंधु घाटी से प्राप्त वस्तुओं एवं टेराकोटा खिलौने से यह ज्ञात होता है कि हमारी संस्कृति एवं कला कितनी उन्नत एवं विकसित रही है।

मिट्टी के बने खिलौने ही एक ऐसा सशक्त माध्यम है, जिसके द्वारा बच्चों को विभिन्न प्रकार की वस्तुओं, चिड़ियों, जानवरों एवं मानवाकृति से खेल–खेल में परिचित कराया जाता है, लेकिन आधुनिक विकास के कारण इन खिलौनों का कुछ क्षेत्र दूसरी वस्तुएं जैसे प्लास्टर, प्लास्टिक, फोम, कागज इत्यादि के खिलौने कब्जा कर रखा है, लेकिन आज भी हम अपने पुरानी संस्कृति को नकार नहीं सकते हैं। बनारस में खिलौने बनाने की पद्धति प्राचीन काल से चली आ रही है।

प्रायः खिलौने बनाने की चार विधियां उनके समाज में प्रचलित हैं, जिनके द्वारा खिलौनों का निर्माण किया जाता है।

1. हाथ द्वारा, 2. सांचे द्वारा, 3. चाक द्वारा, 4. मिश्रित विधि द्वारा।

हाथ द्वारा :

हाथ द्वारा खिलौने बनाने की विधि को डौलिया विधि भी कहते हैं। अर्थात् इस विधि के द्वारा खिलौने का संपूर्ण आकार हाथ से डौलिया कर दिया जाता है। इस विधि के द्वारा छोटे–छोटे खिलौने, विभिन्न तरह की चिड़ियां, मॉडल जैसे– हंस, मोर, तोता, बगुला, बुलबुल, कबूतर इत्यादि साथ ही कथानक विषय के कुछ खिलौने इस विधि के द्वारा बनाते हैं। इस विधि से सिंधु घाटी के ज्यादातर टेराकोटा खिलौने बनाए गए हैं।

सांचे द्वारा :

साधारणतया सांचे दो तरह के होते हैं।

(अ) एकपलिया सांचा और (ब) द्विपलिया सांचा।

एकपलिया सांचा या ठप्पा

एकपलिया सांचे का अर्थ है, सांचे का एक पल्ला। अर्थात सिर्फ सामने का भाग। एकपलिये सांचे द्वारा वॉल हैंगिंग रिलीफ छोटे–छोटे खिलौनों जैसे विभिन्न तरह के चेहरे इत्यादि भी बनाए जाते हैं। गणेश लक्ष्मी के शीर्ष के भाग जैसे– कलनी इत्यादि भी एकपलिये छोटे सांचे से बनाए जाते हैं।

द्विपलिया सांचा

द्विपलिये सांचे का अर्थ है– सांचे का दो भाग अर्थात एक सामने का भाग, दूसरा पीछे का भाग। सांचे के दोनों भाग में मिट्टी का स्लैब बनाकर बारी–बारी से दबा देते हैं। इस विधि के द्वारा गुड़िया, गुड्डा, बबुआ, गणेश–लक्ष्मी इत्यादि बनाते हैं।

चाक द्वारा

हमारी पुरानी संस्कृति अर्थात सिंधु घाटी की सभ्यता से भी चाक द्वारा बनाए गए कुतन के पात्र के बहुत से भाग चाक के द्वारा निर्मित हैं। आज भी कुंभकार दैनिक जीवन के उपयोगी बड़े पत्रों के साथ–साथ छोटे अर्थात कुतन के पात्र का निर्माण करते हैं। इन पात्रों से बच्चों के मनोरंजन के साथ–साथ घर–गृहस्थी में उपयोग होने वालों पात्रों से भी

खेल–खेल में परिचित कराया जाता है। सिंधु घाटी के अलावा राजघाट के खुदाई से भी ऐसे पात्र मिले हैं जो इस समय भारत कला भवन में विद्यमान हैं।

मिश्रित विधि द्वारा

मिश्रित विधि का वर्गीकरण।

(अ) हाथ और सांचे द्वारा

(ब) चाक और सांचे द्वारा

(स) चाक और हाथ द्वारा

(द) हाथ, सांचा व चाक द्वारा

हाथ और सांचे द्वारा

इस विधि में खिलौने के कुछ भाग को एकपलिया या द्विपलिया सांचे के द्वारा जैसे मुंह, धड़ इत्यादि का भाग बना लिया जाता है और कुछ भाग को जैसे हाथ, पैर, नाक, कान, पूंछ, सिंह, सूड़, दांत इत्यादि को हाथ से अलग से बनाकर जोड़ दिया जाता है। इस विधि से बने खिलौने जैसे हाथी, सांड़, गाय, हिरन, जिराफ, लोमड़ी, कंगारू, शेर इत्यादि बनाते हैं।

चाक और सांचे द्वारा

इस विधि के द्वारा खिलौने का ज्यादातर भाग सांचे से बनाया जाता है। कुछ भाग चाक के द्वारा बनाकर जैसे घड़े का भाग, दिए इत्यादि अलग से जोड़ दिया जाता है।

चाक और हाथ द्वारा

प्रायः कुछ खिलौनों के भाग को चाक द्वारा बनाकर और उसके कुछ अंगों को अलग से हाथ से बनाकर जोड़ दिए जाते हैं इस विधि के द्वारा बनी कई तरह की बच्चों को बचाने वाली सीटी है, जिसमें चाक और हाथ दोनों का प्रयोग दिखता है।

हाथ, सांचे व चाक द्वारा

इस विधि में प्रायः तीन विधियों का समावेश है इस विधि से बने खिलौनों का निर्माण कम देखने को मिलता है। इस विधि के द्वारा कुछ भाग से थ्रोइंग कर लिया जाता है तथा कुछ हिस्से को एकपलिये या द्विपलिये सांचे से निकाल लेते हैं साथ ही कुछ हिस्से को हाथ से डौलिया कर अलग से जोड़ देते हैं।

विषय वस्तु

इन उपर्युक्त विधियों द्वारा विभिन्न तरह के खिलौने का निर्माण किया जाता है जैसे– विभिन्न प्रकार की चिड़ियां, पक्षी एवं जानवर इसके अलावा विभिन्न तरह के मानवाकृति जैसे– गुड्डी, गुड्डा, बुड्ढा, बुढ़िया, बबुआ, स्त्री इत्यादि।

इसके साथ ही साथ विभिन्न तरह के कथानक खिलौनों का निर्माण भी यहां के कुंभकार करते हैं जैसे– रामायण से संबंधित कथानक खिलौने इत्यादि।

बनारस के कुंभकार पात्रों, खिलौनों के साथ–साथ मुखौटे या चेहरे का निर्माण भी करते हैं। आधुनिक विकास के कारण या मशीनीकरण होने के कारण मिट्टी के मुखौटों का प्रचलन लगभग बंद होता जा रहा है और इनकी जगह प्लास्टर के चेहरे, पेपर के चेहरे, प्लास्टिक के चेहरे बनने लगे हैं। लेकिन आज भी कुछ कुंभकार मिट्टी के चेहरे बनाते हैं यह चेहरे ज्यादातर दशहरा, दीपावली के समय बनते हैं चेहरों में जैसे दुर्गा, काली, हनुमान, राक्षस, जानवर इत्यादि के चेहरे बनते हैं।

यह चेहरे प्रायः एकपलिये सांचे से बनते हैं। मुखौटों का उपयोग बच्चों के मनोरंजन के साथ–साथ धार्मिक लीलाओं जैसे– मेले इत्यादि में दुर्गा, काली के चेहरों का उपयोग होता है, रामलीला के समय हनुमान, रावण, राक्षस इत्यादि के चेहरों का उपयोग होता है तथा बच्चे भी खेल–खेल में इन चेहरों का उपयोग करते हैं।

मिट्टी के बने पात्रों की तरह मिट्टी के खिलौने भी बनाकर उसे आवे में पकाते हैं। बिस्किट खिलौनों के अलावा कुछ कच्चे खिलौनों या मॉडल पर भी ये लोग रंगों से अलंकृत करते हैं, जैसे– हाथ द्वारा बनाए गए कथानक खिलौने इत्यादि। इन खिलौनों को प्रायः यह लोग दुकान को डेकोरेट करने के लिए करते हैं और अगर अच्छे दाम मिल जाते हैं तो इन्हें बेच भी देते हैं। हमारे समाज में खिलौनों का प्रचलन सदियों से चला आ रहा है और होता रहेगा।

बनारस के कुंभकारों का कथन है कि उनके पूर्वजों के समय की अपेक्षा आज के विषय–वस्तु भी कम थे और उनके काम भी उन्नत तरह के नहीं थे जितनी कि आज हैं। यहां के कुंभकार अपने पूर्वजों के समय की बनी कुछ वस्तुओं को छोड़कर जैसे–पोट्रेट, वाल हैंगिंग, विभिन्न तरह के कथानक खिलौनों का निर्माण, म्यूजिक सेट इत्यादि को जोड़ा है।

इस प्रकार बनारस की कला एवं संस्कृति पर दृष्टिपात करने से ऐसा प्रतीत होता है कि यहां पर खिलौने बनाने की परंपरा प्राचीन रही है। आज के आधुनिक समाज में भी यह खिलौने उपयोगी हैं।

38. मृत्तिका उद्योग– बोस हीरेन्द्रनाथ – 1958

99. मिट्टी के बर्तन– वर्मा फूलदेव सहाय

96. मिट्टी का काम– मनमोहन 'सरल' श्रीकृष्ण– 1959

118. Terracotta- Lucchesi Bruno